रिकॉर्डः– महफिल में जल उठी शमा..... ॐ पिताश्री 26/9/1964
ओम् शान्ति। प०पि०प० शिव को शमा भी कहते हैं। नाम बहुत डाल दिए हैं तो मनुष्य मूँझ गए हैं। शमा कहने से फिर समझते हैं परमात्मा ज्योति स्वरूप है। आत्मा भी ज्योति स्वरूप है। ज्योति जाकर ज्योति में समाती है। बस। मनुष्य तो अज्ञान नींद में बिल्कुल सोए हुए हैं। अब तुम जगती ज्योत बन रहे हो। शमा आए हैं। यह महफिल तो बहुत बड़ी है। कोई तो आकर बाप के बनते हैं। बाप का बन जीते जी फिदा हो जाते हैं। देह–अभिमान छोड़ा तो आप (मुए) मर गई दुनिया। आप कौन? आत्मा। आत्मा शरीर को छोड़ देती है तो सारी दुनिया जैसे उनके लिए मर गई। अभी बाप भी कहते हैं, अपन को आत्मा समझो। हम तो बाप के हैं। शरीर का भान मिटाय देना है। मनुष्य मरते हैं तो देह सहित सब कुछ भूल जाते हैं। समझते हैं, शरीर छोड़ा, ताल्लुक टूटा। शरीर के साथ ही ताल्लुक है। तुम्हारा शरीर होते हुए अशरीरी रहते हो; क्योंकि तुम्हारा ताल्लुक अब बाप से हो गया। तुमको राजयोग सिखलाने लिए बाप ने भी शरीर धारण किया है। महफिल में आए हैं। तुम्हारे में भी कोई पूरा जानते हैं, कोई अधूरा, कोई तो कुछ नहीं जानते। बाप कहते हैं, मैं इस रचना में आया हूँ। यह बातें मनुष्य ही समझेंगे। जानवर तो नहीं समझेंगे। भारतवासी जानते हैं शिवजयन्ती भी है। शिव है प०पि०प०, सभी आत्माओं का बाप। वो आते हैं ज़रूर। ...ह मंदिर भी है। मंदिर तो ढेर बनते हैं। जैसे क्राइस्ट तो एक था। उनकी यादगार में चर्चिज़ कितनी ढेर बनाई हैं। यह भी प०पि०प०, जिसको पतित–पावन कहते हैं, उनके मंदिर हैं। यह है अभी पतित

दुनिया की महफिल, फिर होगी पावन दुनिया की महफिल। पावन दुनिया में तो वो आते नहीं। पावन की महफिल बहुत छोटी और सुखी होती है; इसलिए वहाँ आने की दरकार नहीं। आते हैं बड़ी महफिल में। उनका नाम ही है पतित–पावन। यह है पतित दुनिया। फिर पावन दुनिया भी है। उस नई पावन दुनिया में ज़रूर थोड़े होंगे। तुम बच्चों में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सच्ची–2 सर्विस करते हैं। सच्चाई की सर्विस का सबूत भी निकलता है। तो बाप महफिल में आते हैं। वो है पतितों को पावन बनाने वाला। कहा जाता है चैरिटी बिगन्स एट होम। भारत है बर्थ प्लेस। भारत अविनाशी बाप का अविनाशी बर्थ प्लेस है। मनुष्य सब भूल गए हैं शिवबाबा कब आया है। उनको ही पतित–पावन कहा जाता है। आते भी हैं पतित शरीर में है। उनकी महिमा कितनी भारी है! शिवाय नमः। तुम्हारी महिमा अपरम अपार है। वैकुण्ठ की (कै)से स्थापना करते हैं! जिस वैकुण्ठ की भी महिमा अपरम अपार है। तुम बच्चे ही यह जानते हो और ऐसे वैकुण्ठ में पद पाने लिए पुरुषार्थ करते हो; परन्तु तुम्हारा पुरुषार्थ बड़ा ठण्डा, चींटी मार्ग का देखते हैं। माया किसको कान से, नाक से पकड़ती रहती है। किसको भी छोड़ती नहीं है। बाबा को भी नहीं छोड़ती। चाहता हूँ शिवबाबा को तो निरन्तर याद करें। जैसे पत्नी पति को कितना याद करती है। यह तो पतियों का पति है, बाप है। ऐसे को कितना याद करना चाहिए। ऐसे बाप की हम कितनी महिमा गाएँ। गीत आदि में भी शिवबाबा की कितनी महिमा करते हैं। तेरी महिमा अपरम अपार है। इतनी महिमा क्यों गाई जाती है। कोई कारण तो होगा ना। तुम जानते हो वो तो भारत को स्वर्ग बनाते हैं। भारत को कितना ऊँच बनाते हैं। रावण नीच बना देते हैं, बाप आकर सुखी बनाते हैं। दोज़ख से बहिष्त बना देते हैं। ऐसे बाप को कोई जानते नहीं। पतित तो सारी दुनिया है। भल अशोका होटल आदि के सुख है; परन्तु यह तो सब अल्पकाल के लिए हैं। यह काँग्रेस कौरव राज्य है ही (सब)के पानी मिसल। पाई का भी इसमें सुख नहीं। दुख ही दुख है। सतयुग में राजा–रानी तथा प्रजा कितने सुखी रहते हैं। अभी तो कितने दुखी हैं! कितनी स..... खाते, कितने पाप आदि करते हैं। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। गुरु–गोसाईं आदि जो भी हैं सब पतित हैं। इसलिए इनको आसुरी सम्प्रदाय कहा जाता है। रावण का राज्य है ना। राम के राज्य को दैवी सम्प्रदाय, रावण के राज्य को आसुरी सम्प्रदाय कहा जाता है। भारत दैवी सम्प्रदाय था। भारत की महिमा बड़ी ज़बरदस्त है, जो अब तुम जानते हो। भगवान की महिमा गाते हैं, याद करते हैं; परन्तु जानते नहीं। अरे! भगवान कहते हो तो भगवान का पूरा नाम चाहिए ना। उनका नाम है शिव। उसकी सारी महिमा है। मनुष्य उनके नाम–रूप, देश–काल को जानते नहीं। कह देते, उनका नाम–रूप है नहीं। कहते भी है प०पि०प० परमधाम में रहने वाला है। नाम–रूप, देश बतलाते हैं; परन्तु देह–अभिमान होने कारण उनको याद न करते हैं। याद करते भी हैं तो बिगर समझ। गाते हैं तुम मात–पिता..... तुम समझा सकते हो लौकिक मात–पिता तो हैं ना! फिर यह कौन से मात–पिता हैं? पिता कैसे सृष्टि को रचयिते हैं? कैसे मुखवंशावली रच और उन्हों को राजभाग देते हैं? सो तुम ही जानो और न जाने कोई। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। तुम समझते हो, शिवबाबा ब्रह्मा तन से आकर पढ़ाते हैं। शिवबाबा की ही इतनी भारी महिमा है। राजयोग सिखलाय हमको वैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं ब्रह्मा द्वारा। ज़रूर ब्रह्मा–सरस्वती पहले–2 जाकर ल०ना० बनेंगे। जगदम्बा और जगतपिता बैठे हैं। वो ही विश्व का मालिक बनेंगे। उनके साथ कुमार–कुमारियाँ भी हैं। कितना अच्छा मंदिर है। यह मंदिर आदि तो पहले के बने हुए हैं। अभी हम भेंट करते हैं, हमारे ही यादगार का बना हुआ है। तो यह शिवालय नमः का गीत ज़रूर रखना चाहिए। टेपरिकॉर्ड से भी ग्रामोफोन अच्छा है। आजकल सस्ते भी मिल जाते हैं। दो/चार गीत फर्स्ट क्लास रख लेने चाहिए। बाबा अपना अनुभव भी बतलाते हैं, दिल होती है बाबा को याद कर खावें; परन्तु भूल जाते हैं। उनको याद कर खाने से उनको भी वासना मिलेगी। यूँ तो कहते हैं मैं अभोगता हूँ। उनको भोग–विलास

की दरकार नहीं। उनको यह नहीं आता है कि यह अच्छा है वा बुरा है। बाप कहते हैं, मैं आता ही हूँ तुम बच्चों को पतित से पावन बनाने; क्योंकि रावण ने तुम्हारे पर जीत पहन ली है। अब फिर उस पर जीत पानी है। रावण तुमको कौड़ी जैसा बनाय डेवाला निकाल देते हैं। भारत का अ... डेवाला है ना। फिर तुमको सॉलवेन्ट बनाता हूँ। इनसॉलवेंट बुद्धिहीन मनुष्य बनते हैं। तो यह शिवाय नमः का गीत बड़ा अच्छा नम्बरवन है। उनकी महिमा है। फिर भारत की भी महिमा है। वण्डरफुल भारत था। गाते तो हैं ना, स्वर्ग था, हीरों–जवाहरों के महल थे। फिर वो कहाँ गए? माया की कैसे प्रवेशता होती है। सतयुग में देवी–देवताओं के धर्म, कर्म श्रेष्ठ थे। भ्रष्ठ कर्म कराने वाली माया वहाँ होती नहीं। वहाँ कर्म अकर्म बन जाते हैं। तुम्हारे कर्म ऐसे बनाता हूँ जो वहाँ माया होती नहीं और यहाँ के पुरुषार्थ की प्रालब्ध सुख की तुम पाते हो। तुमको कोई दुख होने की बात ही नहीं। पाप करने की दरकार नहीं। यहाँ तो पैसे के लिए कितने पाप करते हैं। वहाँ तो बहुत धन रहता है। बेहद की राजाई है ना। वहाँ भी भिन्न–2 गाँव के राजाएँ होंगे। गाया जाता है भारत दैवी राजस्थान था। जब दैवी राजस्थान था तो देवी–देवताओं का धर्म श्रेष्ठ था। सबसे श्रेष्ठ देवी–देवताओं का धर्म था। कर्म भी श्रेष्ठ थे। वहाँ माया ही नहीं ... जो पाप करावे। अभी भ्रष्ठाचार कहते हैं तो ज़रूर कब शिष्टाचार भी होगा ना। अभी भ्रष्टाचार को यह मनुष्य लोग अथवा साधु–संत आदि थोड़े ही मिटावेंगे। यह तो और ही भ्रष्टाचार बढ़ावेंगे। भ्रष्टाचार यानी पाप का घड़ा भर रहा है। बाप आय श्रेष्ठ देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। तुम जानते हो, हम श्रेष्ठ बन रहे हैं, तो कोई पाप का काम न करना है। डर रहना चाहिए। अच्छे–2 बच्चों को माया नाक से पकड़ पाप कराय देती है। अभी तुम जानते हो, महफिल में बाप आए हैं, कैसे मुखवंशावली बनाय उनको श्रेष्ठ बनाते हैं सन्मुख। ज़रूर शरीर का तो लोन लेना ही पड़े। कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूँ। यह अपने 84 जन्मों को नहीं जानते, मैं बतलाता हूँ। इनका नाम ब्रह्मा रख दिया है। ब्रह्मा में ही प्रवेश करता हूँ; क्योंकि ब्रह्मा द्वारा स्थापना करनी है। ऐसे थोड़े ही बौद्धी, इस्लामी वा सिक्ख में प्रवेश करेंगे। बाप कहते हैं, मुझे इस जन्म में प्रवेश करना है जो पहले–2 सूर्यवंशी श्री ना० था। फिर उनको ही बनाता हूँ। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। यह है ज्ञान कांड और वो है भक्ति कांड। ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग कहा जाता है। आधा कल्प भक्ति कांड चलता है। ये है ज्ञान कांड। वहाँ फिर भक्ति का नाम–निशान नहीं रहता। फिर आधा कल्प भक्ति कांड चलता है। यह भी ड्रामा में नूँध है। पतित बनना ही है। गाते भी हैं भगवान आकर भक्तों को साथ ले जाते हैं। परमपिता परमात्मा को याद करते हैं– बाबा, आकर हमको लिबरेट करो। आसुरी मित्र–संबंधी, गुरु–गोसाईं (सबसे) लिबरेट करते हैं। फिर तुम पावन बन जाएँगे तो तुमको माँ–बाप भी दैवी मिलेंगे। अनेक प्रकार के गुड़ियों की पूजा करते हैं। मैं तो न गुड्डा हूँ, न गुड्डी हूँ। मैं तो हूँ ही निराकार। तुम गुड्डे–गुड्डी अब दुखी हो। वैकुण्ठ में बहुत सुखी थे; परन्तु बच्चे घड़ी–2 भूल जाते हैं। रूठ भी पड़ते हैं। ब्राह्मणियों से भी रूठ पड़ते हैं तो वर्सा पाने को भी छोड़ देते हैं। अरे! वर्सा तुमको बाप से लेना है ना। वो है पढ़ाई, वो तो बाबा ने बहुत सहज समझाया है। भल कहाँ न भी आय सकते तो मुरली मँगाय पढ़ सकते हो। बाकी सर्विस का सबूत भी देना है, नहीं तो मुरली भेज क्या करेंगे? कोई पाप करते हैं तो बुद्धि का ताला एकदम बंद हो जाता है। बाबा कुछ नहीं क(रते)। आपे ही ताला बंद हो जाता है। बाप तो समझाते हैं तुमको बहुत मीठा बनना है। कोई को दुख मत दिओ। अन्त में तुम बहुत मीठा बाप जैसा बनेंगे। तो पुरुषार्थ करना है। दिल से पूछना है, किसको तंग तो नहीं करते हैं? हमसे कोई नाराज़ तो नहीं होते। यूँ बाहर वाले नाराज़ तो बहुत होंगे। तुम लिखते हो, गीता झूठी है, तो नाराज़ हो पड़ते हैं; परन्तु ये तो समझाने लिए सच बताया जाता है।

तुम ब्राह्मण कुल भूषणों को रोज़ मुरली ज़रूर सुननी चाहिए। मुरली न सुनेंगे तो धारणा कैसे होगी! मुरली न सुनते हैं तो ज़रूर समझो कमबख्त हैं। बख्तावर नहीं। मुरली को कब छोड़ना न चाहिए। ब्राह्मणों को भी मुरली शिवबाबा से मिलती है ना। उनसे कनेक्शन रखना है। डायरैक्ट मुरली तो भेजे, फिर आप (स)मान बनाकर दिखाओ। प्रबंध देने लिए तैयार है। बाप को तो याद करते रहो। बाप की याद औरों को देते रहो। समाचार दो तो पता पड़े, नहीं तो कैसे समझेंगे बाप की सर्विस कर रहे हो। सबूत ज़रूर चाहिए सर्विस का। मुरलीधर बनने का शौक चाहिए। टेप्स भी मुरलीधर बनती है ना। यह एक्युरेट मुरली सुनाय सकती, तुम नहीं सुना सकेंगे। तो क्या करना चाहिए? औरों के कल्याण लिए टेप–मशीन लेकर देनी चाहिए। सब सुनेंगे तो उन सबका फल देने वाले को बहुत मिलेगा। लेकर देंगे भी वो जिनको इसके रहस्य का पता होगा। इस मुरली सुनने से तुम राजाई पद पाते हो। और कोई साधु–संत आदि का भाषण सुनने से कोई स्वर्ग का मालिक बनेंगे क्या अथवा मनुष्य से देवता थोड़े ही बनेंगे, और ही गिरते रहते हैं। ये तो फर्स्ट क्लास दान करना है जिससे बहुतों का कल्याण होता है 21 जन्मों लिए। तो टेप–रिकॉर्ड लेकर देना कितनी अच्छी सर्विस है। बच्चे बैठ सर्विस करेंगे। मकान फिर भी तुम्हारा ही रहेगा। उसका फल तुमको मिलेगा। वहाँ रिटर्न में बड़े–2 म(हल) मिल जावेंगे। वो समय (आवेगा) तुम बच्चों को तो बहुत मकान मिलेंगे, चरणों में झुकते रहेंगे। मकान भी हम क्या करेंगे, हमको तो सर्विस करनी है। मकान लेवें, मुफ़्त में पैसा भरकर क्यों देवें। सौदागर भी ये पक्का है। सेन्सीबुल सौदागर है। बाकी वो तो सब नॉन–सेन्सीबुल हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे लकी ज्ञान सितारों प्रति मात–पिता, बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमॉर्निंग।